fgnh
fgnh
d{kk 1 – 5

भाषा एक औजार है जिसका इस्तेमाल हम ज़िंदगी को समझने के लिए, उससे जुड़ने के लिए और जीवन–जगत को प्रस्तुत करने के लिए करते हैं। यह सब करने के लिए जाँच–पड़ताल, तर्क, संप्रेषण जैसे कौशलों की जरूरत होती है। इसके साथ–साथ भाषा यानी बहुभाषिकता हमारी पहचान भी है और हमारी सभ्यता व संस्कृति का अभिन्न अंग भी। इसलिए यह आवश्यक है कि हिंदी सीखने–सिखाने का दायरा इतना व्यापक हो कि भाषा के इन उपयोगों से उसका नाता न टूटे। इससे आगे बढ़ें तो हम पाएँगे कि भाषा हमें अपने परिवेश में कई रूपों में बिखरी मिलती है, जैसे– अखबार, साइनबोर्ड, पोस्टर, विज्ञापन आदि। इसके अतिरिक्त भाषा अपने साहित्यिक रूप में भी उपलब्ध होती है। ऐसे में हमारा प्रयास यह होना चाहिए कि स्कूल के दस–बारह वर्षों के दौरान विद्यार्थियों में हिंदी के व्यापक और विविध स्वरूप की गहरी समझ विकसित हो जाए।

Kku dk foLrkj

स्कूली शिक्षा पूरी होने तक विद्यार्थी का भाषा–बोध और साहित्य–बोध इस सीमा तक विकसित हो जाए कि उसमें किसी रचना के बारे में स्वतंत्र राय बनाने का आत्मविश्वास पैदा हो सके। वह पाठ्यपुस्तकों की परिधि के बाहर भी किसी रचना से जुड़कर उस पर भावनात्मक और बौद्धिक प्रतिक्रिया कर सके। वह तरह–तरह के औपचारिक व अनौपचारिक विषयक्षेत्रों में प्रयुक्त होने वाली भाषा के रूपों से परिचित हो और उसका प्रयोग कर सके। वह संदर्भ और आवश्यकता के अनुसार विभिन्न किस्म की शैलियों से परिचित हो सके। विद्यार्थियों को भाषा की ताकत का अहसास हो। वह इस बात को समझें कि भाषा के माध्यम से हम केवल संप्रेषण ही नहीं करते, बल्कि जो हम सोचते और महसूस करते हैं उसे सुंदर, प्रभावशाली व्यंजनात्मक और पैने ढंग से अभिव्यक्त करने के लिए भाषा एक सशक्त साधन है। विद्यार्थी हिंदी की बारीकी और सुंदरता को परख सके। उसे यह ज्ञान हो कि हिंदी के माध्यम से यथार्थ और काल्पनिक दुनिया की रचना की जा सकती है। भाषा के माध्यम से विद्यार्थी का ज्ञानक्षेत्र इतना विस्तृत हो कि वह राष्ट्रीय समाचारपत्रों और पत्रिकाओं की परिधि में आने वाले व्यक्ति, परिवेश और समाज से जुड़े मुद्दों की सामान्य जानकारी रख सके।

dk'kyk dk foLrkj

दस–बारह वर्ष तक स्कूल में हिंदी पढ़ने के बाद हिंदी पर विद्यार्थियों की पकड़ इतनी मज़बूत हो जाए कि वे कुशल पाठक, लेखक, श्रोता व विश्लेषक हों। वे अख़बारों के संपादकीय पृष्ठ और पत्रिकाएँ बिना कठिनाई के पढ़ और समझ पाएँ और उन पर टिप्पणी कर पाएँ। वे आवश्यकता और उद्देश्यों के अनुसार किसी किताब, लेख आदि में से उपयुक्त सामग्री इकट्ठा करके उसका सटीक उपयोग कर सकें। वे रेडियो–टेलीविज़न पर हिंदी में प्रसारित होने वाली औपचारिक परिचर्चाओं व भाषणों को सुनकर समझ सकें।

विद्यार्थियों में बोलने का कौशल इस सीमा तक विकसित हो चुका हो कि औपचारिक चर्चाओं व वाद–विवाद में बेझिझक होकर बोल सकें। वे अपने विचारों और भावनाओं को स्पष्ट, व्यवस्थित और असरदार ढंग से अभिव्यक्त कर सकें। भाषा पर उनका इतना अधिकार हो चुका हो कि वे जीवन की विविध स्थितियों

से आत्मविश्वासपूर्वक गुजर सकें। विभिन्न प्रकार के औपचारिक व अनौपचारिक संदर्भों के अनुसार विद्यार्थियों में उचित शैली चुन सकें। वे सहज, कल्पनाशील, प्रभावशाली और व्यवस्थित ढंग से क़िस्म–क़िस्म का लेखन कर सकें। भाषा को जानदार बनाने के लिए उर्दू के और आंचलिक शब्दों का इस्तेमाल करने की समझ उनमें हो। पढ़ना, सुनना, लिखना, बोलना–इन चारों प्रक्रियाओं में विद्यार्थी अपने पूर्वज्ञान की सहायता से अर्थ की रचना कर पाएँ और कही गई बात के निहितार्थ को भी पकड़ पाएँ।

- कही या लिखी गई बात को आँख मूँदकर स्वीकार करने की बजाय विद्यार्थी उसे आलोचनात्मक दृष्टि से परखें और उस पर प्रासंगिक सवाल उठाएँ।
- विद्यार्थियों के तार्किक कौशल इतने विकसित हों कि वे दो बातों के बीच के अंतस्संबंध को समझ सकें तथा अपने द्वारा कही या लिखी गई बात की तर्क से पुष्टि कर सकें।
- विद्यार्थियों में अवलोकन और विश्लेषण के कौशलों का भरपूर विकास हो चुका हो। वे चीजों, स्थितियों, लोगों, परिवेश और मनोभावों का बारीक और विश्लेषणात्मक वर्णन कर सकें। इन कौशलों की मदद से विद्यार्थी भाषा की नियमबद्धता को भी पहचान पाएँ। साथ ही साथ परिवेश और समाज के विभिन्न पहलुओं का वैज्ञानिक विश्लेषण कर पाएँ।
- भाषा, कला और सृजनात्मकता व कल्पनाशीलता का गहरा संबंध है। विद्यार्थियों का दस–बारह वर्षों तक हिंदी के साथ संपर्क उनमें कलाबोध विकसित करे और वे आसपास बिखरी कला को उसके विविध रूपों में सराह सकें। उनके काम में कलात्मकता और सृजनशीलता झलके।

#>ku vkj jo;k

स्कूली शिक्षा पूरी करने तक विद्यार्थी हिंदी से गहरी आत्मीयता महसूस करने लगे। साथ ही बाकी भारतीय भाषाओं की विविधता को स्वीकार करें और उनके समृद्ध साहित्य को सराहना की दृष्टि से देखें। भाषा विद्यार्थी के निर्भय व्यक्तित्व की रचना कर सके। बोलियों के प्रति विद्यार्थियों की सोच, संकीर्ण न हो और वे अच्छी तरह समझें कि भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से भाषा और बोली में कोई अंतर नहीं है। यह अंतर केवल सामाजिक और राजनैतिक है। भारत की समृद्ध संस्कृतियों और रिवाजों के प्रति उनका रवैया पूर्वाग्रहों से मुक्त और सराहनापूर्ण हो। अल्पसंख्यक जातियों व समाजों के प्रति वे संवेदनशील हों और लैंगिक समता उनके सोच एवं व्यवहार दोनों में झलकती हो। क्षमताओं का कोई एक मापदंड नहीं होता और लोगों में क्षमताओं के विविध रूप हो सकते हैं– इस बात को विद्यार्थी अच्छी तरह समझें, स्वीकारें और सराहें। विद्यार्थी भाषा और सत्ता के अंतस्संबंध से परिचित हों ताकि वे स्वयं भाषा को (जाति और लिंग के संदर्भ में) प्रभुत्व और शोषण के हथियार के रूप में इस्तेमाल न करें, न ही उसका ऐसा इस्तेमाल होने दें।

ikB; iLrd

उपर्युक्त बातों के संदर्भ में बहुत ज़रूरी है कि भाषा–शिक्षण की पद्धतियों और पाठ्यपुस्तकों व शिक्षण सामग्री में इन विचारों की झलक और समझ मिले। यद्यपि पाठ्यपुस्तकें भाषा–शिक्षण का एकमात्र स्रोत नहीं होनी चाहिए फिर भी पाठ्यपुस्तकें हमारी स्कूली शिक्षा में सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। अतः उनमें संकलित

रचनाएँ व अभ्यास ऐसे हों कि अपेक्षित ज्ञान, समझ, दृष्टिकोणों, कौशलों और रवैये को बनाने, सँवारने में उनकी भागीदारी हो। ये पुस्तकें साधन के रूप में भाषा की ताकत को निरंतर, कक्षा–दर–कक्षा पैना करती रहें ताकि विद्यार्थी विविध परिस्थितियों एवं आवश्यकता के अनुसार उसका उपयोग करने में सक्षम हों।

- इन पुस्तकों में कथात्मक और जानकारीपरक रचनाओं की विविधता हो जिससे विद्यार्थियों को विभिन्न प्रकार के साहित्य का परिचय मिल सके और वे ऐसी अन्य रचनाओं को समझ व सराह सकें। साथ ही साथ वे रचनाओं को आत्मसात करते हुए उन पर भावनात्मक और बौद्धिक प्रतिक्रिया कर सकें।
- किसी भी विषय का अस्तित्व शून्य में विकसित नहीं होता है, इसलिए यह जरूरी है कि विद्यार्थी कोई रचना पढ़ते समय अन्य विषयों की अवधारणाओं से उसे जोड़ पाएँ और उन दोनों का अंतर्संबंध देख सकें। पाठ्यपुस्तकों में कहानी, कविता, संस्मरण आदि जैसी प्रचलित विधाएँ तो हों ही, इसके अतिरिक्त अख़बारी लेखन, पैरोडी, विज्ञापन, नारे, कार्टून, संदेश, भाषण, भेंटवार्ता, घोषणाएँ, रहस्य–रोमांस जैसी सामग्री का भी समावेश हो। चुनी गई रचनाओं में कम से कम बीस प्रतिशत रचनाएँ अन्य भारतीय भाषाओं और विदेशी भाषाओं की हों।
- इन पुस्तकों में विषयवस्तु का फलक विस्तृत हो जिसमें समाज के सरोकार झलकते हों, जैसे– पर्यावरण/परिवेश, संवैधानिक दायित्व, शांति, संस्कृति (सिनेमा, मंचन कलाएँ, खान–पान पहनावा, त्योहार आदि), विज्ञान, इतिहास आदि।
- इन विषयवस्तुओं के जरिये भाषा के विभिन्न प्रयोगों की बानगी और भाषा की आँचलिक और साहित्यिक छटा के वैविध्य का परिचय भी हो ताकि विद्यार्थी उसकी बारीकी, सौंदर्य और आँचलिकता की सराहना कर सके और उसकी समालोचना कर सके।
- रचनाओं के माध्यम से विद्यार्थी विभिन्न विषयों से जुड़े भाषा–प्रयोग और शैलियों से परिचित हो सकें।
- पाठ्यपुस्तकों में रचनाएँ एक वातावरण निर्मित करती हैं और अभ्यास। प्रश्न उनको परखने, उनसे गहराई से जुड़ने और व्यापक अनुभव–स्तर से तादात्म्य का मौका देते हैं। परखना, विश्लेषण, आलोचना आदि के लिए जिन कौशलों की आवश्यकता होती है इन अभ्यासों के माध्यम से उनके अवसर मिलते हैं। भाषायी और सांस्कृतिक विविधता को स्वीकार करने और सराहने की संवेदनशीलता अभ्यास–प्रश्नों के ज़रिये विकसित की जा सकती है। इसके अतिरिक्त पुस्तकों में विविध विषयों के संदर्भ में परिवेश और समाज के अवलोकन और बारीक विवरण से संबंधित प्रश्न भी होने चाहिए। चूँकि कक्षा में कक्षा से बाहर की भाषा का विश्लेषण भाषा के विकास का सशक्त साधन है, इसलिए ऐसे प्रश्न भाषा के संदर्भ में भी दिए जा सकते हैं ताकि विद्यार्थी भाषा की संरचना की पड़ताल और विश्लेषण कर पाएँ। यह विश्लेषण कक्षा के बहुभाषी संदर्भ में भी किया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त प्रश्नों के ज़रिए, किसी रचना, विषय आदि को अनेक पहलुओं से देखने की सम्यक् दृष्टि विकसित की जाए।
- कक्षा 9 और 10 मातृभाषा, द्वितीय भाषा और कक्षा 11 और 12 (आधार) में व्यावहारिक व्याकरण की एक संक्षिप्त पुस्तक तैयार की जा सकती है जो आदेशात्मक और वर्णनात्मक न होकर विश्लेषणात्मक हो। यह पुस्तक अध्यापकों के लिए होगी।

0;kdj.k

बच्चों की भाषा में इस बात के पर्याप्त संकेत मिलते हैं कि वे अपनी भाषा का व्याकरण अच्छी तरह जानते हैं। पर व्याकरण की सचेत समझ बनाने के लिए यह आवश्यक है कि बच्चों को उसके विभिन्न पक्षों की पहचान विविध पाठों के संदर्भ में और आसपास के परिवेश से जोड़कर कराई जाए। व्याकरण की अवधारणाओं की अमूर्त परिभाषाएँ याद करने से ज्यादा महत्वपूर्ण है उन्हें वास्तविक संदर्भों में समझना है। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए पाठ्यपुस्तकों के अभ्यास। प्रश्न और कक्षा में शिक्षक द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली व्यावहारिक गतिविधियाँ और युक्तियाँ महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। व्याकरण के पक्षों की समझ चरणबद्ध क्रम में विकसित की जा सकती है : पहला चरण पहचान का है और दूसरा चरण प्रयोग का है।

mnkgj.k 1 कक्षा 3 में नाम वाले शब्दों के बारे में बच्चों को पाठ और कक्षा के परिवेश के संदर्भ में (जैसे, किताब, रोटी, मेज, पंखा, रसीद, रिबन, जूता, दीवार, छत आदि) बताया जा सकता है। कक्षा 4 में बच्चे ऐसे शब्दों का वाक्य में प्रयोग कर सकते हैं या किसी बच्चे द्वारा बनाई गई कहानी। घटना आदि में नाम वाले शब्द ढूँढ़ सकते हैं। कक्षा 5 में नाम वाले शब्दों को संज्ञा का नाम दिया जा सकता है और कक्षा 6 में बच्चों को संज्ञा के भेदों के बारे में बताया जा सकता है।

mnkgj.k 2 पाठ्यपुस्तक के अभ्यास–प्रश्नों में या कक्षा में शिक्षक द्वारा एक प्रकार के शब्दों की सूची दी जा सकती है जिसका अवलोकन करके बच्चे उनमें होने वाले बदलावों को पहचान सकते हैं– (एक) गेंद– (तीन) गेंदे – (एक) गिलास– (पाँच) गिलासों (एक) सड़क– (कई) सड़कें– (एक) भैंस – (कई) भैंसें। बच्चों द्वारा इन परिवर्तनों को पकड़ पाना भाषा के नियमबद्ध स्वरूप को समझ पाने की दिशा में पहला कदम है।

पाठ्यक्रम में कक्षानुसार व्याकरण के कुछ बिंदु दिए गए हैं। इन बिंदुओं को ध्यान में रखते हुए पाठ्यपुस्तक निर्माता और शिक्षक पाठ में सहज रूप से उभरकर आने वाले व्याकरण संबंधी और भाषा की बारीकी व सुंदरता संबंधी अन्य पक्षों को क्रमशः समझने और सराहने में छात्र–छात्राओं की सहायता करें। एक कक्षा में चर्चित बिंदुओं की चर्चा दूसरी कक्षाओं में भी जारी रह सकती हैं। ऊपर की पंक्तियों में चर्चित उदाहरणों के अलावा कई गतिविधियों और युक्तियों को भी प्रयोग में लाया जा सकता है, जैसे– क्लोज टेस्ट, शब्द–कड़ी, अंत्याक्षरी आदि।

ekr`Hkk"kk d: :i esa fgUnh ¼d{kk 1 ls 5½

d{kk 1 ls 2

बच्चे के व्यक्तित्व निर्माण में मातृभाषा का महत्वपूर्ण योगदान है। मातृभाषा बच्चा अपने माता–पिता एवं अन्य परिजनों से सुनकर अनायास ही अनुकरण द्वारा सीख लेता है और उससे उसका सहज संबंध स्थापित हो जाता है। प्रत्येक बच्चे के दृष्टिकोण, उसकी रुचियों, क्षमताओं यहाँ तक कि मूल्यों और मनोवृत्तियों को भी आकार देती है। भाषा सोचने, महसूस करने और चीजों से जुड़ने का एक उत्तम साधन है। भाषा ही बच्चे को समझदार, विचारवान, सभ्य और शिक्षित बनाती है। मातृभाषा में ही बच्चे का मस्तिष्क सबसे पहले क्रियाशील होता है। अतः मातृभाषा बच्चे की पहली उपलब्धि और सहायिका है। यही कारण है कि सभी शिक्षाशास्त्री एकमत हैं कि प्राथमिक स्तर की शिक्षा में संप्रेषण का माध्यम मातृभाषा ही होना चाहिए। इसके लाभ शोध द्वारा स्थापित किए जा चुके हैं।

विद्यालय बच्चों के लिए ऐसा स्थान है जो कई दृष्टियों से घर से भिन्न है। विद्यालय के अपने नियम–कायदे हैं। बच्चे कुछ घंटों के लिए अपने परिवार से दूर हो जाते हैं। परंतु बच्चे अपने साथ बहुत

कुछ लेकर विद्यालय आते हैं – अपनी भाषा, अपने अनुभव एवं दुनिया को देखने का अपना दृष्टिकोण आदि। इन्हीं सबका उपयोग करते हुए शिक्षक को बच्चों से आत्मीय संबंध बनाना पड़ता है ताकि विद्यालय के नवीन परिवेश में बच्चे अपनापन अनुभव करें। बच्चों के घर की भाषा और विद्यालय की भाषा के बीच के संबंध को उसकी विविधता एवं लचीलेपन के साथ देखना अत्यंत आवश्यक है। प्रत्येक बच्चे की भाषा अपने आप में पूर्ण होती है इसलिए उसे किसी मापदंड पर आँकना उचित नहीं है।

बच्चे घर–परिवार एवं परिवेश से प्राप्त बोलचाल की भाषा के अनुभवों को लेकर ही विद्यालय आते हैं। पहली बार स्कूल में आने वाला बच्चा शब्दों के अर्थ और उनके प्रभाव से परिचित होता है। लिपिबद्ध चिह्न और उनसे जुड़ी ध्वनियाँ बच्चों के लिए अमूर्त हैं, इसलिए पढ़ने का प्रारंभ अर्थ से ही हो और किसी उद्देश्य के लिए हो। यह उद्देश्य कहानी सुनकर, पढ़कर आनंद लेने के रूप में भी हो सकता है। धीरे–धीरे बच्चों में भाषा की लिपि से परिचित होकर अपने परिवेश में उपलब्ध लिखित भाषा को भी पढ़ने समझने की जिज्ञासा उत्पन्न होती है। भाषा शिक्षण की इस प्रक्रिया के मूल में बच्चों के बारे में यह अवधारणा है कि बच्चे दुनिया के बारे में अपनी समझ और ज्ञान का निर्माण स्वयं करते हैं। यह निर्माण किसी के सिखाए जाने या जोर जबरदस्ती से नहीं बल्कि बच्चों के स्वयं के अनुभवों और आवश्यकताओं से होता है। इसलिए बच्चों को ऐसा वातावरण मिलना जरूरी है जहाँ वे बिना किसी रोक–टोक के अपनी उत्सुकता के अनुसार अपने परिवेश की खोज–बीन कर सकें।

यही अवधारणा बच्चों के भाषिक कौशलों पर भी लागू होती है। स्कूल में आने पर बच्चे प्रायः स्वयं को बेझिझक अभिव्यक्त करने में असमर्थ पाते हैं क्योंकि जिस भाषा में वे सहज रूप से अपनी राय, अनुभव, भावनाएँ आदि व्यक्त करना चाहते हैं वह स्कूल में प्रायः स्वीकृत नहीं होती। भाषाशिक्षण को बहुभाषी संदर्भ में रखकर देखने की आवश्यकता है। कक्षा में बच्चे अलग–अलग भाषाई–सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से आते हैं। कक्षा में इनकी भाषाओं का स्वागत किया जाना चाहिए और उनमें बच्चों से सहज अभिव्यक्ति क्षमता का उपयोग करते हुए हिंदी पढ़ाई जानी चाहिए। शिक्षक बहुभाषिकता की महत्ता को समझकर कक्षा में उसका उपयोग करें, तभी वह बच्चों को अपने परिवेश में स्थित सांस्कृतिक और भाषिक विविधता के प्रति संवेदनशील बना सकता है। आज बहुभाषिकता को बच्चे के व्यक्तित्व विकास के लिए संसाधन के रूप में विकसित करने की आवश्यकता है।

mí';

1. बच्चों में अपने अनुभव और विचार बताने की इच्छा और उत्सुकता जगाना;
   - बच्चे स्कूल के वातावरण में अपनापन महसूस करें।
   - वे घर की भाषा और स्कूल की भाषा में आपसी संबंध बनाते हुए उसको विस्तार दे सकें।
   - बच्चों को प्रश्न पूछने, अपनी बात कहने का भरपूर मौका मिले।
2. बच्चों में दूसरों की बात सुनने में रुचि और धैर्य पैदा करना, उनसे सुनी बात पर टिप्पणी दे पाना;
3. बच्चे द्वारा अक्षर जोड़कर पढ़ने की बजाय समझकर पढ़ना;
   - परिवेश में उपलब्ध संदर्भों, चित्रों और छपी हुई सामग्री से परिचित होने के कारण बच्चा अनुमान से पढ़ने का प्रयास कर सकेगा।

4. बच्चों द्वारा अपनी दुनिया तथा अपने पूर्वज्ञान की मदद से पाठ्यसामग्री और स्कूली परिवेश में उपलब्ध लिखित सामग्री से अर्थ ग्रहण करना, जैसे –
   - पढ़ने की प्रक्रिया को दैनिक जीवन की (स्कूल और बाहर की) ज़रूरतों से जोड़ना, जैसे–कक्षा और स्कूल में अपना नाम, अपनी मनपसंद पाठ्यसामग्री और पाठ्यपुस्तक का नाम पढ़ना।

- परिवेश में उपलब्ध छपी हुई सामग्री (चित्र और शब्द) को देखकर बच्चे संदर्भ से परिचित होने के कारण अनुमान लगाकर पढ़ने का प्रयास कर सकते हैं।

5. सुनी और पढ़ी कहानियों और कविताओं से अपने अनुभव जोड़ पाना और उसके बारे में बात करना।
   - बच्चे अपने अनुभव संसार और काल्पनिक संसार में बेझिझक और सहज ढंग से अभिव्यक्ति कर सकें।
   - सुनी हुई कहानियों को अपने शब्दों और अपने अंदाज में दूसरों को सुना सकें।
6. चित्रकारी को स्वयं की अभिव्यक्ति का माध्यम बनाना
   - बच्चे स्वाभाविक अभिव्यक्ति के लिए किसी भी प्रकार का रेखांकन कर सकते हैं।
7. लिपि चिह्नों को देखकर और उनकी ध्वनियों को सुनकर और समझकर उनमें सहसंबंध बनाते हुए लिखने का प्रयास कर सकें।

ikB; lkexh

पहली और दूसरी कक्षा में एक–एक पाठ्यपुस्तक निर्धारित की जाएगी। इन पाठ्यपुस्तकों में ही पर्याप्त अभ्यास कार्य शामिल होगा। रचनाओं के चयन में इन बातों का ध्यान रखा जाएगा कि वे रोचक और बच्चों के अपने परिवेश से जुड़ी हुई हों। उनमें पर्यावरण संबंधी ज्ञान और चिंता समाहित हो। वे लिंग समानता, शांति और स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता विकसित करने वाली हों। कार्य और श्रम के प्रति निष्ठा उत्पन्न करने वाली हों, और कलात्मक दृष्टि निर्मित करने और मूल्य चेतना जगाने में सहायक हों।

प्राथमिक स्तर के लिए अध्यापकों को संबोधित एक पुस्तक का निर्माण भी किया जा सकता है जिसमें कक्षा में उचित वातावरण निर्माण, विभिन्न भाषायी परिवेश से आए बच्चों से सहज संबंध, विभिन्न भाषाई कौशलों का विकास, पाठ्यसामग्री के उचित उपयोग, विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों के लिए शिक्षण युक्तियाँ एवं दृश्य श्रव्य सामग्री के उचित उपयोग एवं मूल्यांकन आदि पर चर्चा होगी।

बच्चों को ध्यान में रखकर आवश्यक दृश्य–श्रव्य सामग्री का निर्माण किया जा सकता है।

f'k{k.k ;qfDr;k

- बच्चों की मौलिकता एवं सहज रचनाशक्ति को सामने लाने का शिक्षक का प्रयास भाषा शिक्षण की प्राथमिकता होती है।
- कक्षा में सहज आत्मीय वातावरण निर्मित करने के लिए बच्चों से उनके घर, परिवेश, पसंद–नापसंद, संगी–साथियों के बारे में बातचीत करनी चाहिए ताकि उनकी झिझक खुल सके।
- कक्षा एवं स्कूल में उपलब्ध स्थान का उपयोग अध्यापक को इस प्रकार करना चाहिए कि वह बच्चों के भाषायी विकास के अनुकूल वातावरण निर्मित कर सके।
- कक्षा में दीवारों पर बच्चों द्वारा निर्मित एवं एकत्रित चित्रों एवं रचनाओं तथा शिक्षक द्वारा एकत्रित चित्रों एवं रचनाओं को इस प्रकार लगाना चाहिए कि बच्चे उसे सरलता से देख सकें। चित्र वार्तालाप एवं लेखन की गतिविधियों के लिए उपयोगी होते हैं।
- कक्षा में भाषा की विविधता के प्रति संवेदनशील बनकर उसका उपयोग भाषा शिक्षण में करना चाहिए। मसलन– भोजपुरी, अवधी, संथाली के शब्दों, मुहावरों, अभिव्यक्तियों का खुलकर प्रयोग करने का अवसर बच्चों को मिलना चाहिए।
- शिक्षण प्रक्रिया को रुचिकर एवं वैविध्यपूर्ण बनाने के लिए शिक्षण सामग्री विविध स्रोतों से एकत्रित की जानी चाहिए, जैसे– श्रव्य–दृश्य सामग्री, चार्ट, फ्लैश कार्ड्स, पत्र–पत्रिकाओं से कतरनें आदि।
- चित्र दिखाकर बच्चों से कहानी सुनाने के लिए कहा जा सकता है।
- कहानी सुनाकर बच्चों से सुनी गई कहानी को अपने शब्दों में सुनाने के लिए कह सकते हैं।
- गीत एवं कविता की प्रस्तुति उचित लय एवं हाव–भाव के साथ होनी चाहिए।
- बच्चों में रेखांकन और चित्रांकन के माध्यम से लेखन कौशल का विकास किया जा सकता है।

- चित्र बनाकर उस चित्र के आधार पर बच्चों से चार–पाँच वाक्य लिखने को कहा जा सकता है।
- शिक्षण प्रक्रिया में समग्रतावादी दृष्टिकोण अपनाया जाना चाहिए।
- विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए उपयुक्त शिक्षण सामग्री का इस्तेमाल किया जाए।

eY;kdu

मूल्यांकन का उद्देश्य बच्चों की सीखने की क्षमता का आकलन करना है और सीखने की कठिनाइयों तथा बच्चों की समस्याओं को पहचानना है। विद्यार्थी विशेष की समस्या को पहचान कर उसके अनुसार शिक्षण विधि में सुधार मूल्यांकन का एक महत्वपूर्ण अंग है। पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों का मूल्यांकन पूर्णतया अनौपचारिक एवं अप्रत्यक्ष होना चाहिए तथा मूल्यांकन की प्रक्रिया सतत् एवं व्यापक। इस बात का भी ध्यान रखा जाना चाहिए कि मूल्यांकन निष्पक्ष, न्यायपूर्ण और दायित्वपूर्ण हो। बच्चों की मौलिकता, कल्पनाशीलता, सृजनशीलता के आंकलन के पर्याप्त अवसर हों।

कक्षा में शिक्षक इस बात का प्रयास करें कि प्रत्येक गतिविधि में बच्चे की सहभागिता हो। जाँच की प्रक्रिया का प्रारंभ एक सतर्क अवलोकन के माध्यम से किया जाना चाहिए जिससे यह पता चल सके कि वह क्या जानते हैं और उन्हें क्या जानने की जरूरत है। शिक्षक उनकी प्रत्येक गतिविधि का निरीक्षण करें, केवल सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने का ही नहीं।

विशेष आवश्यकता वाले बच्चों का मूल्यांकन उनकी क्षमता और सीमाओं को ध्यान में रखकर किया जाए। इस स्तर पर किसी भी रूप में मौखिक और लिखित औपचारिक परीक्षा न ली जाए।

d{kk 3 l 5

तीसरी कक्षा तक आते–आते बच्चे स्कूल से परिचित हो जाते हैं और वहाँ के वातावरण में घुलमिल जाते हैं। स्कूल का वातावरण और दूसरे बच्चों का साथ उन्हें हिंदी भाषा में निहित स्थानीय, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक विविधताओं से परिचित कराता है। इसके अतिरिक्त वे अन्य भाषाओं के प्रति संवेदनशील भी हो जाते हैं।

इस स्तर पर बच्चों की भाषा से जुड़े कौशलों की प्रकृति में गुणात्मक बदलाव आएगा। उनमें स्वतंत्र रूप से पढ़ने की आदत विकसित होगी। पढ़ी हुई सामग्री से वे संज्ञानात्मक और भावनात्मक स्तर पर जुड़ेंगे और उसके बारे में स्वतंत्र और मौलिक विचार व्यक्त कर सकेंगे।

यहाँ तक आते–आते लिखना एक प्रक्रिया के रूप में प्रारंभ हो जाता है, और वह अपने विचारों को व्यवस्थित ढंग से लिखने लगते हैं।

mí';

1. बच्चों में पुस्तकों के प्रति रुचि जागृत करना –
   - पाठ्यपुस्तक की विधाओं से परिचित होना और उससे प्रेरित हो कर उन विधाओं की अन्य पुस्तकें पढ़ना।
   - मुख्य बिंदु/विचार को ढूँढ़ने के लिए विषय–सामग्री की बारीकी से जाँच करना।
   - विषय सामग्री के माध्यम से नए शब्दों का अर्थ जानने की कोशिश करना।
2. पूर्व अर्जित भाषायी कौशलों का उत्तरोत्तर विकास करना
   - दूसरे के विचारों को सुनकर समझना और अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त कर सकना।
   - दूसरों के विचारों को पढ़कर समझने की योग्यता का विकास करना।
   - पठन के द्वारा ज्ञानार्जन एवं आनंद प्राप्ति में समर्थ बनाना।

- अध्ययन की कुशलता का विकास करना।
- स्वतंत्रता और आत्मविश्वास के साथ लिख पाना।
- मनपसंद विषय का चुनाव कर लिख सकना।
- विषयवस्तु और विचारों के प्रस्तुतीकरण में लेखन की तकनीक का विकास करना।
- दूसरों की अभिव्यक्ति को सुनकर उचित गति से शब्दों एवं वाक्यों को लिख सकना।

3. भाषा को अपने परिवेश और अपने अनुभवों को समझने का माध्यम मानना और उसका सार्थक उपयोग कर सकना।
   - कक्षा में बच्चों को बहुभाषिक और बहुसांस्कृतिक संदर्भों से जोड़ना।
   - बच्चों की कल्पनाशीलता और सृजनात्मकता को विकसित करना।
   - भाषा के सौंदर्य की सराहना करने की योग्यता का विकास करना।

ikB; lkexh

प्रत्येक कक्षा (3, 4, 5) के लिए एक–एक पाठ्यपुस्तक निर्धारित की जाएगी। इन पाठ्यपुस्तकों में ही पर्याप्त अभ्यास कार्य शामिल होगा। पुस्तकों की विषय–सामग्री उद्देश्यों और शैक्षिक क्रियाकलापों पर आधारित होगी। सामग्री का चयन कक्षा 1 और 2 में विकसित हुए भाषायी कौशल और विषयों को ध्यान में रखकर किया जाएगा।

कक्षा 3, 4 और 5 के बच्चों को अतिरिक्त पठन के लिए भी प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

f'k{k.k ;fDr;k

कक्षा एक और दो के लिए सुझाई गई युक्तियों के साथ ही निम्नलिखित क्रियाकलापों का आयोजन भाषा शिक्षण के लिए किया जा सकता है –

- बच्चों की रुचि के अनुसार परिचित विषय या प्रसंग पर चर्चा।
- कहानी, वर्णन, विवरण आदि पर प्रश्न पूछने और उत्तर देने को प्रोत्साहित करें।
- भाषण, वाद–विवाद, कविता पाठ, अभिनय आदि का आयोजन कराया जाए।
- कहानी, नाटक के पात्रों का अभिनय कराया जाए।
- अनौपचारिक एवं औपचारिक परिस्थितियों में परिचित एवं पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त पुस्तकों से कहानी, कविता ढूँढ़ने तथा सुनाकर पढ़ने के लिए कहना।
- उचित गति एवं प्रवाह के साथ पढ़ने पर बल दें।
- दूसरों की हस्तलिखित सामग्री, पत्र आदि पढ़वाए जा सकते हैं।
- सरल एवं परिचित विषयों पर वाक्य, अनुच्छेद लेखन।
- अनुभव पर आधारित घटना का विवरण लेखन।
- अनौपचारिक एवं औपचारिक पत्र लेखन।
- वर्ग–पहेली भरवाना।
- चित्र दिखाकर उस पर आधारित कविता, कहानी लेखन।
- संदर्भ पुस्तकों को पढ़ने तथा कठिन शब्दों को शब्दकोश में से देखकर उनके अर्थ समझने का अवसर दिया जाए।
- अधूरी कहानी को पूरी कर सुनाने तथा लिखने को कहा जा सकता है।
- पुस्तकालय समृद्ध करने हेतु प्रयास।

0;kdj.k d: fcn

d{kk 3

- तरह–तरह के पाठों (पाठ्यपुस्तक व अन्य) के संदर्भ में और कक्षा के संदर्भ में संज्ञा, विशेषण और वचन की पहचान और व्यवहारिक प्रयोग।
- गणित के पाठ्यक्रम के अनुरूप हिंदी में संख्याएं, संयुक्ताक्षरों की पहचान।

d{kk 4

- तरह–तरह के पाठों (पाठ्यपुस्तक के व अन्य) के संदर्भ में और कक्षा के संदर्भ में सर्वनाम और लिंग की पहचान।
- विशेषण का संज्ञा के साथ सुसंगत प्रयोग, वचन का प्रयोग।

d{kk 5

- तरह–तरह के पाठों के संदर्भ में (पाठ्यपुस्तक के एवं अन्य) और कक्षा के संदर्भ में क्रिया, काल और कारक चिह्नों की पहचान।
- शब्दों के संदर्भ में लिंग का प्रयोग।

अभ्यास प्रश्नों के ही माध्यम से बच्चों को व्याकरण सिखाया जाए। इस प्रकार के अभ्यास दिए जाएं जिनसे बच्चे सहज रूप से संज्ञा, सर्वनाम और शब्द व्यवस्था (पर्याय और विलोम– स्तरानुकूल) की जानकारी प्राप्त करें जैसे चाँद के पर्यायवाची शब्दों का अभ्यास कराना हो तो अभ्यास दिया जा सकता है–

चाँद को तुम और क्या–क्या कहते हो?

अभ्यास प्रश्नों के माध्यम से व्याकरण सीखना बच्चे के लिए नीरस, बोझिल और उबाऊ प्रक्रिया नहीं होगी।

eY;kdu

मूल्यांकन का उपयोग बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए किया जाता है इसीलिए पहली कक्षा से बारहवीं कक्षा तक के विद्यार्थियों के लिए सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन पद्धति ही श्रेष्ठ पद्धति है।

जैसाकि पहले कहा जा चुका है कि पहली और दूसरी कक्षा में मूल्यांकन बच्चों की गतिविधियों के अवलोकन के आधार पर किया जाना चाहिए एवं उन्हें पता भी नहीं होना चाहिए कि उनका मूल्यांकन हो रहा है।

तीसरी से पाँचवीं कक्षा के मूल्यांकन में थोड़ा बदलाव होगा और इस स्तर पर कुछ औपचारिक मूल्यांकन भी किया जाएगा। यहाँ बच्चों को पता होना चाहिए कि उनका मूल्यांकन हो रहा है। लेकिन यह प्रक्रिया उनके मन में डर पैदा करने वाली न हो। सत्र में कई बार छोटी–छोटी लिखित और मौखिक परीक्षाएँ ली जाएं न कि एक ही बार।

मूल्यांकन करते समय शिक्षक द्वारा बच्चे की प्रगति की तुलना किसी पूर्व कल्पित मापदंड से न की जाए उनकी प्रगति का लगातार और सूक्ष्म आकलन किया जाए और प्रत्येक बच्चे का रिकार्ड रखा जाना चाहिए जिसमें शिक्षक को हर सप्ताह या पखवाड़े में प्रत्येक बच्चे की प्रगति के बारे में टिप्पणी लिखनी चाहिए। शिक्षक को बच्चों की विभिन्न गतिविधियों पर ध्यान रखते हुए उसकी प्रगति की जाँच करनी चाहिए, जैसे–कक्षा में परिचर्चा में भाग लेते हुए, छोटे समूह में काम करते हुए, कापियाँ या दूसरी जगह पर लिखित कार्य करते हुए आदि।

प्राथमिक कक्षाओं में भाषा ज्ञान की उपलब्धि बच्चों का न केवल भाषा विशेष में प्रगति का मार्ग प्रशस्त करती है वरन् अन्य विषयों के अध्ययन को भी सार्थक रूप से प्रभावित करती है। अतः मूल्यांकन करते समय निदानात्मक पक्ष पर विशेष ध्यान देना जरूरी होगा और उसके अनुसार उपचारात्मक शिक्षण की व्यवस्था उपयुक्त समय पर की जानी चाहिए।

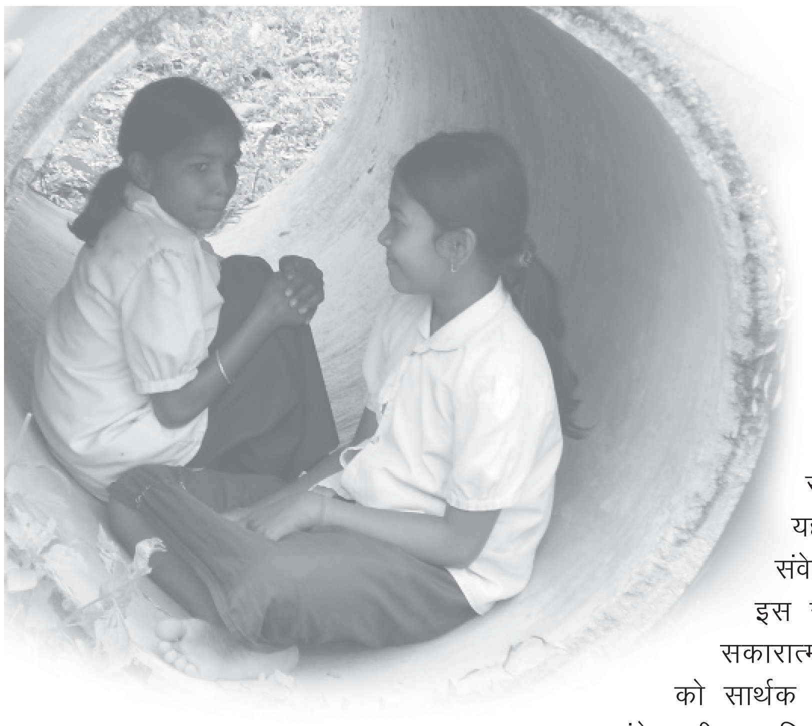

ekr`Hkk"kk d: i esa fgnh ¼d{kk 6 ls 8½

iLrkouk

छठी से आठवीं कक्षा के बच्चे किशोरावस्था में कदम रख रहे होते हैं।

यह दौर मन, मानस और शारीरिक परिवर्तन की दृष्टि से संवेदनशील होता है।

इस नये संधि काल में स्कूल, कक्षा और शिक्षक की सकारात्मक भूमिका छात्र–छात्राओं की ऊर्जा और जिज्ञासा को सार्थक स्वस्थ दिशा दे सकती है ताकि मननशील और संवेदनशील व्यक्ति के रूप में उनका विकास हो सके। इसके लिए जरूरी है कि वे कक्षा के साथ भावनात्मक और बौद्धिक जुड़ाव महसूस कर सकें।

सौंदर्यबोर्ध, साहित्यबोध और सामाजिक–राजनैतिक बोध के विकास की दृष्टि से स्कूली जीवन का यह चरण अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि इस चरण में ऐसे कई किस्म के बोधों और दृष्टियों के अंकुर फूटते हैं। चाहे भाषायी सौंदर्य हो या परिवेशगत, कोई चीज सुंदर है तो क्यों है। यदि कोई वस्तु, रचना, फिल्म आदि अच्छी है तो वे कौन से बिंदु हैं जो उसे अच्छा बनाते हैं, उनके बारे में स्पष्ट सोच होना बहुत ज़रूरी है।

प्रारंभिक कक्षाओं में समझकर पढ़ना सीख लेने के बाद अब छात्र–छात्राएं पढ़ते समय किसी रचना से भावनात्मक रूप से जुड़ भी सकें और कोई नई किताब या रचना सामने आने पर उसे उठाकर पलटने और पढ़ने की उत्सुकता उनमें पैदा हो। समाचार पत्र के विभिन्न पन्नों पर क्या छपता है इस बात की जानकारी उन्हें हो। समाचार पत्र में छपी किसी खबर, लेख या कही गई किसी बात का निहितार्थ क्या है? छात्र–छात्राएं उसमें झलकने वाले सोच, पूर्वाग्रह और सरोकार आदि को पहचान पाएँ।

कुल मिलाकर प्रयास यह होना चाहिए कि इस चरण के पूरा होने तक छात्र–छात्राएँ किसी भाषा, व्यक्ति, वस्तु, स्थान, रचना आदि का विश्लेषण करने, उसकी व्याख्या करने और उस व्याख्या को आत्मविश्वास व स्पष्टता के साथ अभिव्यक्त करने के अभ्यस्त होने लगें।

mís';

- निजी अनुभवों के आधार पर भाषा का सृजनशील इस्तेमाल।
- दूसरों के अनुभव से जुड़ पाना और उनके परिप्रेक्ष्य से चीजों, स्थितियों तथा घटनाओं को समझने की क्षमता का विकास।
- भाषा की बारीकी और सौन्दर्यबोध को सही रूप में समझने की क्षमता का विकास।
- दृश्य और श्रव्य माध्यमों की सामग्रियों (बाल साहित्य, पत्र–पत्रिकाएं, दूरदर्शन व कम्प्यूटर जनित कार्यक्रम, नाटक, सिनेमा, परिचर्चा, भाषण आदि) को पढ़कर,देखकर और सुनकर समझने तथा उस पर स्वतंत्र व स्वाभाविक मौखिक एवं लिखित प्रतिक्रिया व्यक्त करने की क्षमता का विकास।
- विभिन्न साहित्यिक विधाओं और ज्ञान से संबंधित अन्य विषयों की समझ का विकास तथा उससे आनंद उठाने की क्षमता का विकास।
- पाठ्यपुस्तकों के अतिरिक्त अभिनय, गीत, संवाद, परिचर्चा, अन्त्याक्षरी, घटनावर्णन, प्रश्नोत्तरी, भाषण, खेल–कूद व अन्य महत्वपूर्ण पाठ्यक्रम सहगामी क्रिया–कलापों के आधार पर भाषा और साहित्य को समझना।

- पठित, लिखित और सुने हुए भाषिक ज्ञान से संबंधित सामग्रियों का तार्किक दृष्टि से अध्ययन करने की प्रवृति का विकास।
- सरसरी तौर पर किसी पाठ को देखकर उसकी विषयवस्तु का पता करने के कौशल का विकास और उसमें किसी विशेष बिंदु को खोजने के लिए पाठ की बारीकी से जाँच करने की क्षमता का विकास।
- सुनी, पढ़ी और समझी हुई भाषा को सहज और स्वाभाविक लेखन द्वारा अभिव्यक्त करने की क्षमता का विकास।
- शब्दों, मुहावरों, लोकोक्तियों और कहावतों का सुचिंतित प्रयोग करने की प्रवृति का विकास
- मौखिक और लिखित अभिव्यक्ति में संदर्भ और आवश्यकतानुसार समुचित भाषा शैली व प्रयोग को चुनने की समझ का विकास।
- भाषा की नियमबद्ध प्रकृति को पहचानना और उसका विश्लेषण करना।

ikB; lkexh

छठी से आठवीं कक्षा में मातृभाषा हिंदी के शिक्षण में मदद देने के लिए जो पाठ्यपुस्तक तैयार की जाए उसमें पंद्रह से अठारह पाठ हो सकते हैं। पाठों का चुनाव करते समय इस बात की सावधानी रखना जरूरी है कि वे आरंभिक शिक्षा व्यवस्था के छा्त्र–छात्राओं के संवेदना लोक के साथी बन सकें। पाठ कुछ पूर्वनिर्धारित संदेशों को पहुँचाने के मकसद से गढ़े नहीं जाएँ। पाठ हमउम्र विद्यार्थियों के सपनों, उम्मीदों, आशंकाओं और उनकी विस्तृत हो रही दुनिया के संदर्भ में प्रामाणिक प्रतीत होना चाहिए। जरूरी है कि अलग–अलग अनुभव क्षेत्रों से जुड़े लोगों के लिखे पाठ चुने जाएँ। पाठों के चयन में 'महानता' शर्त नहीं है। शुचिता से अधिक संवेदना की सच्चाई पर ध्यान देना चाहिए।

- आवश्यकतानुसार पाठगत संदर्भों के आधार पर भाषा की संरचनाओं की समकालीन शैलियों/रूपों को ध्यान में रखते हुए शिक्षण संदर्शिका भी तैयार की जा सकती है। विद्यार्थियों की रुचि और रुझान के अनुसार ही पास–पड़ोस सहित सम्पूर्ण परिवेश की भाषिक समृद्धि का भाषा, साहित्य व अन्य विषयगत शिक्षण युक्ति में अधिक से अधिक उपयोग किया जाना चाहिए। अतः प्रयोग और उपयोग के क्रम में कक्षा–अध्यापन में विद्यार्थियों के सहज, स्वाभाविक भाषा कौशलों की समृद्धि में आवश्यक पाठ्यपुस्तकों के अतिरिक्त अभ्यास एवं परियोजना कार्य में भाषण, परिचर्चा, संवाद, श्रुतलेख, वाचन तथा विभिन्न समस्याओं पर वाद–विवाद जैसे कार्यों को शिक्षण विधि में शामिल कर विद्यार्थियों को अधिक से अध्कि वैज्ञानिक दृष्टियुक्त, चिंतनशील और स्वावलंबी बनाया जा सकता है।

i|jd ikB;i|Lrd : तीनों कक्षाओं (6, 7, 8) के लिए स्थायी महत्व की एक–एक पुस्तकें निर्धारित की जाएगी जिससे बच्चों में पठन रुचि का विकास हो सके।

f'k{k.k ;fDr;k

विद्यार्थियों की पढ़ने में रुचि जगाने एवं भाषा ज्ञान में वृद्धि के लिए पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त पठन सामग्री विकसित की जा सकती है। इस सामग्री की सूची पुस्तक के अंत में दी जाएगी। इसका ध्यान रखना जरूरी है कि किताबें सिर्फ़ कहानी, कविता और उपन्यास न हों, बल्कि वे जानकारी और दूसरे क्षेत्रों से भी जुड़ी हुई हों। छात्र–छात्राएँ अपनी रुचि के अनुसार पढ़ने के लिए किताबों का चुनाव कर सकते हैं। स्कूल में वे सारी पुस्तकें उपलब्ध होनी चाहिए। किताबों में हिंदीतर भाषा को भी जगह मिलनी चाहिए। पूरक सामग्री का इस्तेमाल छात्र–छात्राओं में पढ़ने की रुचि विकसित करने के मकसद से किया जाना चाहिए। इसलिए वे वार्षिक परीक्षा के दायरे में नहीं आएंगी। उनके ज़रिए अध्ययन को इसका पता करने में मदद मिलेगी कि छात्र–छात्रा की पढ़ने की रुचि, क्षमता के विकास की गति क्या है।

- समसामयिक मुद्दों और बच्चों के संज्ञानात्मक स्तर से जुड़े मुद्दों पर कक्षा में समूह में परिचर्चा आयोजित की जा सकती है।

- बच्चों द्वारा पढ़ी गई कहानियों का समूह में नाट्य–रूपांतरण आयोजित किया जा सकता है।
- पढ़ी हुई रचनाओं के आधार पर अपनी रचना और फैंटेसी के साथ नई रचना कर सकते हैं।
- चित्रों व फोटोग्राफों का छात्र–छात्राएँ गहराई से मौखिक या लिखित विश्लेषण करेंगे।
- बच्चों को मौखिक प्रश्न पूछने के लिए और रचनाओं पर सच्ची प्रतिक्रिया करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।
- शब्दकोशों से बच्चों को परिचित कराने के लिए उससे जुड़ी हुई गतिविधियाँ कराई जा सकती हैं।
- अख़बारों, पत्रिकाओं और विभिन्न विषयों की किताबों का भरपूर इस्तेमाल किया जाना चाहिए।
- विज्ञापनों, पोस्टरों, साइनबोर्ड और भाषा के अन्य उपयोगों का विश्लेषण कक्षा शिक्षण में किया जाना चाहिए।
- पठन–सामग्री के संदर्भ के माध्यम से छात्र–छात्राओं का ध्यान भाषा की बारीकी की ओर दिलाया जा सकता है, जैसे– अनुमति–आदेश, शांति–सन्नाटा, प्रेरक–प्रेरित, बाँह–हाथ–हथेली में अंतर। ऐसे शब्दों और मुहावरों का अर्थ लिखकर वाक्य बनाने की बजाय छात्र–छात्राओं को संदर्भ में शब्द या मुहावरे का प्रयोग करने को कहा जाए।
- कोई भी विषय, कार्यक्षेत्र, भाषायी रूप न जानने योग्य नहीं होता। विभिन्न कार्यक्षेत्रों से जुड़ी प्रयुक्ति (विशिष्ट भाषा–प्रयोग) से छात्र–छात्राओं को परिचित कराने के अवसर जुटाए जा सकते हैं, जैसे– खेल, लोहारगीरी, बुनकरी, फोटोग्राफी, इससे कुछ छात्र–छात्राओं की सामाजिक व पारिवारिक पृष्ठभूमि को कक्षा में स्वीकृति मिलेगी।
- कक्षा में छात्र–छात्राओं की विविध केंद्रिक और अन्य क्षमताओं के साथ संबंध बनाते हुए गतिविधियों की भी जरूरत है, उदाहरण के लिए वातावरण में व्याप्त मूल ध्वनियों का गहराई से विश्लेषण किया जा सकता है या परिवेश में उपस्थित वृक्ष, फूल आदि की गंध की सूक्ष्म संवेदना विकसित की जा सकती है।

ijh{kk vkj eY;kdu

परीक्षा का प्रयोग शिक्षा में गुणात्मक सुधार के लिए होना चाहिए। विद्यार्थियों के भाषिक, साहित्यिक और अन्य विषयक ज्ञान ग्रहण करने के स्वाभाविक कौशल को स्वाभाविक और व्यावहारिक रूप में ही कक्षाओं में पाठ्यपुस्तक पढ़ाने–लिखाने के अतिरिक्त अन्य ज्ञान से संबंधित क्रिया–कलापों के समुचित अवलोकन और आकलन की क्रिया अनवरत जारी रहनी चाहिए। विद्यार्थियों के स्वानुभव आधारित विकसित समझ को व्यावहारिक ढंग से परीक्षण और आकलन करने की ज्यादा आवश्यकता है, जिसे लगातार कक्षा अध्यापन के दरम्यान ही किया जाना चाहिए। प्रश्न निर्माण में भी प्रश्न–पत्र निर्माता को ध्यान रखना चाहिए कि उसमें पाठों के चयन के लिए जो आवश्यक शर्तें हैं, उसकी क्षति तो नहीं हो रही है। इसके लिए प्रश्न–पत्र निर्माता शिक्षकों के लिए भी निर्देश आवश्यक है, जिसे शिक्षक निर्देशिका में स्पष्टतः उल्लेखित किया जाना चाहिए। आकलन में हो सके तो ग्रेडिंग किया जाना चाहिए। मूल्यांकन की प्रकृति मानवीय, विद्यार्थी–मित्रवत, उत्तरदायीपूर्ण और पारदर्शी होनी चाहिए। लिखित और मौखिक परीक्षा के अंकों का अनुपात 70/30 होनी चाहिए।

eY;kdu

सतत् मूल्यांकन और वार्षिक मूल्यांकन का अनुपात 30/70 का होगा।

- छात्र–छात्राओं के अपने अनुभवों से विकसित समझ को कक्षा में सीखने–सिखाने की प्रक्रिया के दौरान समूह में चर्चा और लिखित प्रश्नों के माध्यम से आँका जा सकता है।
- उद्देश्यों में उल्लिखित दृश्य–श्रव्य सामग्री पर छात्र–छात्राओं की भावनात्मक व बौद्धिक प्रतिक्रियाओं को मौलिकता, गहराई आदि के मापदंडों पर आँका जा सकता है।

- पूरक सामग्री को सतत् मूल्यांकन में ही शामिल किया जाए। इसके अंतर्गत छात्र–छात्राओं को पुस्तक–समीक्षा करने, विभिन्न पात्रों पर अपनी राय देने और अपनी कल्पना से रचना के अंत का पुनर्लेखन करने के लिए कहा जा सकता है।
- विभिन्न उद्देश्यों के लिए किए जाने वाले तरह–तरह के लेखन कार्यों (जैसे–पोस्टर, विज्ञापन, सूचना–संदेश डायरी लेखन आदि) को भी मूल्यांकन में शामिल किया जा सकता है।
- वार्षिक मूल्यांकन के लिए प्रश्न–पत्र तैयार करते समय इस पाठ्यक्रम के पहले अध्याय में दिए गए भाषा–शिक्षण के उद्देश्यों और पाठ्यपुस्तक में दिए गए प्रश्नों की प्रकृति को ध्यान में रखा जाए। पाठ की समझ से संबंधित ऐसे प्रश्न न हों जिनके उत्तर रटने की गुंजाइश हो। प्रश्न ऐसे हों जिनके उत्तर बच्चे अपनी कल्पना से दें या जिनके उत्तर लिखने के लिए छात्र–छात्राएँ पाठ में अनकही, अंतर्निहित बातों को पकड़ने का प्रयास करें।
- व्याकरण के पक्षों और शब्दों की बारीकी की समझ का मूल्यांकन संदर्भ में किया जाए। पाठ्यपुस्तक के बाहर की किसी रचना में संज्ञा, क्रिया विशेषण, पदबंध, आदि को ढूँढ़ने और पुनरुक्ति (संज्ञा, विशेषण आदि) की अर्थ–छटाओं को पहचानने से संबंधित प्रश्न दिए जा सकते हैं। मुहावरों के प्रयोग से संबंधित प्रश्न पूछने के लिए छात्र–छात्राओं को अपनी कल्पना से चार–पाँच वाक्यों में उपयुक्त संदर्भ रचने को कहा जा सकता है। वाक्यों में शब्दक्रम परिवर्तन का अर्थ पर प्रभाव, क्रिया और कर्त्ता / कर्म की अन्विति,– इस प्रकार के कई अन्य वाक्य–संरचना से संबंधित प्रश्न पूछे जा सकते हैं।

0;kdj.k d: fcn

d{kk 6

- विविध पाठों (पाठ्यपुस्तक के व अन्य के संदर्भ में संज्ञा और विशेषण के भेदों की पहचान व प्रयोग) वाक्य में ''ने'' के प्रयोग का क्रियारूप पर प्रभाव।
- मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग और उनके लिए उचित संदर्भ का वर्णन।
- विराम चिह्नों का प्रयोग : पूर्णविराम, अल्पविराम, प्रश्नवाचक चिह्न।

d{kk 7

- कर्म के आधार पर क्रिया के भेदों की पहचान व प्रयोग (अकर्मक, सकर्मक)।
- समास का सामान्य परिचय।
- मुहावरों और लोकोक्तियों का वाक्यों में प्रयोग।

d{kk 8

- वाक्य के प्रकारः सरल, संयुक्त, मिश्र।
- विविध पाठों के संदर्भ में अर्थ की दृष्टि से पुनरुक्ति की पहचान व प्रयोग।
- संधि का सामान्य परिचय ।
- पाठ्यपुस्तकों में दी गई लिपि के रूप का प्रयोग।

कक्षा 6 से 8 तक शब्द व्यवस्था (पर्याय, विलोम आदि) से भी बच्चों को परिचित कराना।

f}rh; Hkk"kk d: :i e: fgnh ¼d{kk 6 l: 8½

छठीं कक्षा में हिंदी पढ़ने वाले विद्यार्थी के पास अपनी मातृभाषा का ज्ञान होता है और उसके प्रयोग से भी वह वाकिफ है। पहली भाषा की यही जानकारी उसे दूसरी भाषा के रूप में हिंदी पढ़ने में मदद करेगी। ये विद्यार्थी पहली बार छठी कक्षा में हिंदी की संरचनाओं से परिचित होते हैं लेकिन उनका भाषिक विकास बड़ी तेजी से

होता है। यही कारण है कि वे दो तीन साल हिंदी पढ़ने के बाद इस स्थिति में पहुँच जाते हैं कि हिंदी को माध्यम के रूप में चुन सकें। इस स्तर पर जहाँ एक ओर हिंदी भाषा की शुरुआती संरचनाओं से परिचित कराया जाएगा तो दूसरी ओर विषय सामग्री छठी कक्षा के बच्चों के वय और मानसिक तथा संवेदनात्मक स्तर को ध्यान में रखकर चुनी जाएगी। छठी से आठवीं कक्षा के विद्यार्थी उम्र के अत्यंत ही संवेदनशील दौर में होते हैं। इस समय उनकी कल्पना आकार ग्रहण कर रही होती है और वे उसके दायरे को आगे सार्वजनिक दायरे में अपनी जिम्मेवारियों को समझने लगते हैं। वे देश, विदेश, समाज के प्रति सभी तरह की संवेदनाओं की भाषिक अभिव्यक्ति करने लगते हैं। इस संबंध में उनकी अपनी राय भी दृढ़ होने लगती है। इस स्तर पर हिंदीतर मातृभाषा वाले छात्रों को हिंदी के रूप में एक ऐसा साथी मिलना चाहिए जो उनके अपने सांस्कृतिक परिवेश के साथ सहज संबंध बनाते हुए उनके भीतर अपरिचित के प्रति स्नेहपूर्ण उपस्थिति पैदा कर सके।

उपर्युक्त बातों को ध्यान में रखकर द्वितीय भाषा के रूप में छठी से आठवीं तक के विद्यार्थियों के लिए निर्मित पाठ्यक्रम के निम्नलिखित उद्देश्य होंगे –

míS';

- दैनिक जीवन में हिंदी में समझने तथा बोलने की क्षमता का विकास।
- हिंदी का बाल और शिक्षा साहित्य सहज रूप से पढ़ने और उसका आनंद उठाने की सामर्थ्य का विकास।
- बोलने की क्षमता के अनुरूप लिखने की क्षमता का विकास।
- बोलचाल की हिंदी को सुनकर समझने की क्षमता का विकास।
- हिंदी के व्याकरणिक पक्षों को पाठ के संदर्भ में समझ पाना और अपनी मातृभाषा व हिंदी की संरचना की समानताओं व अंतर की पहचान करने की क्षमता का विकास।
- विभिन्न क्षेत्रों, स्थितियों में हिंदी की विभिन्न प्रयुक्तियों को समझने की योग्यता का विकास।
- संचार के विभिन्न माध्यमों (प्रिंट और इलैक्ट्रानिक) में प्रयुक्त हिंदी के विभिन्न भाषा रूपों को समझने की योग्यता का विकास।
- कक्षा के बहुभाषिक और बहुसांस्कृतिक संदर्भों के प्रति संवेदनशीलता का विकास।

iB;&lkexh

- ऐसी पाठ्यपुस्तक तैयार की जाए जिसमें चुनी गई मौलिक रचनाओं की भाषा में और बोलचाल की हिंदी में ज्यादा अंतर न हो। इस पुस्तक में वार्तालाप के कुछ सहज नमूने भी दिए जा सकते हैं। इन पुस्तकों में संदर्भ से जोड़कर व्याकरण के उन बिन्दुओं को विशेष रूप से उभारा जाए जिससे बच्चों के लिए हिंदी में बातचीत करने में मदद मिले।
- रचनाओं के चयन में छात्र–छात्राओं के बौद्धिक और संवेदनात्मक स्तर को ध्यान में रखना जरूरी है। चूँकि हिंदी में अनूदित गैर हिंदी पाठों को उदारता से लेने की वकालत मातृभाषा हिंदी की किताबों में भी की गई है, द्वितीय भाषा के रूप में हिंदी शिक्षण के लिए तैयार की गई किताबों में भी ऐसे पाठों को लिया जाना चाहिए।
- पढ़ने के लिए विभिन्न विधाओं का भाषा की दृष्टि से सरल साहित्य और बाल–पत्रिकाएँ उपलब्ध कराई जाएँ। नवसाक्षरों के लिए पुनर्लिखित क्लासिक साहित्य और पत्रिकाएँ भी प्रयोग में लाई जा सकती हैं।

f'k{k.k ;fDr;k

- प्रथम भाषा–अर्जन की तरह द्वितीय भाषा के रूप में हिंदी के सहज अर्जन के लिए हिंदी में लिखी चीजों से भरा परिवेश रचना जैसे – चीजों के नाम, छोटी कविताएँ, पोस्टर, जाने–पहचाने विज्ञापन आदि।
- अक्षरों की बजाय बच्चों के परिचित हिंदी शब्द–भंडार से हिंदी सिखाने की शुरुआत करना।
- चित्र, फोटोग्राफ, रेडियो, टेलीविजन आदि की सहायता से हिंदी बोलने–सुनने के अवसर जुटाना।
- छात्र–छात्राओं की मातृभाषा के गीतों और उनके हिंदी अनुवाद की सहायता से इन भाषाओं की संरचना का विश्लेषण करना।
- उपर्युक्त गतिविधि और पाठों के संदर्भ में विविध संस्कृतियों पर बातचीत के अवसर जुटाना।
- रेडियो, टेलिविजन पर सुने–देखे कार्यक्रमों पर बातचीत के लिए बच्चों को प्रोत्साहित करना।
- लेखन के जरिये अपने विचारों और मनोभावों को अभिव्यक्त करने के लिए बच्चों को प्रोत्साहित करना।
- रोल प्ले के माध्यम से विभिन्न प्रयुक्तियों के प्रयोग के लिए बच्चों को प्रोत्साहित करना।
- जहाँ संभव हो छात्र–छात्राओं को हिंदी में छोटी–छोटी फिल्में दिखाना और उन पर बातचीत करना।
- संदर्भपरक भाषा–अर्जन की दृष्टि से श्रुतलेख, क्लोज टेस्ट जिसमें एक पाठांश का हर सातवाँ शब्द हटा दिया जाता है और छात्र को भाषा के सहजबोध के आधार पर रिक्त स्थान भरने को कहा जाता है।
- ऐसे अभ्यास–प्रश्नों का प्रयोग करें जो बच्चों की अभिरुचि का विकास करने में सहायक हो, विषय विस्तार करने वाले हों तथा पठन के प्रति रुचि जागृत करने वाले और लिखने की प्रेरणा देने वाले हों।

eY;kadu

- मूल्यांकन का 30 प्रतिशत भाग आंतरिक हो और यह मुख्य रूप से हिंदी के प्रकार्यपरक पक्ष पर आधारित हो।
- बच्चों की सहज मौखिक व लिखित अभिव्यक्ति का मूल्यांकन होगा, रटे हुए उत्तरों का नहीं। रटने की आदत को हतोत्साहित करने की सख्त जरूरत है।
- व्याकरण की समझ को संदर्भपरक प्रश्नों के माध्यम से आँका जाएगा।
- प्रक्रिया लेखन (देखें कक्षा 3 – 5 का पाठ्यक्रम) में केवल अंतिम प्रारूप का मूल्यांकन करने की बजाय लिखने की प्रक्रिया में हुई प्रगति का मूल्यांकन किया जाएगा।
- परिभाषापरक प्रश्न पूछने की बजाय दिए गए पाठांश में व्याकरण के पक्षों की पहचान और अवलोकन के आधार पर भाषा के नियमों की पहचान का मूल्यांकन किया जाएगा।
- विविध संदर्भों में विभिन्न उद्देश्यों के अनुसार उचित भाषा–शैली और कल्पनाशील प्रयोग का मूल्यांकन होगा।
- छात्र–छात्राओं की मौखिक अभिव्यक्ति का सतत् मूल्यांकन किया जाएगा जिसमें प्रश्न पूछना, प्रतिक्रिया व्यक्त करना, परिचर्चा में भाग लेना शामिल हो।

कुछ प्रमुख व्याकरणिक बिन्दु (कक्षा 6, 7 एवं 8 के लिए)

- पाठ्यपुस्तक के विविध पाठों के संदर्भ में संज्ञा, विशेषण और वचन की पहचान और व्यावहारिक प्रयोग।
- तरह–तरह के पाठों के और कक्षा के संदर्भ में सर्वनाम और लिंग की पहचान।
- विशेषण का संज्ञा और क्रिया के साथ सुसंगत प्रयोग।
- पाठों के संदर्भ में ही क्रिया–काल और पक्ष की पहचान।
- वाक्य में 'ने' का प्रयोग।
- वाक्य संरचना।
- मुहावरे (सरल) – आँख दिखाना, हाथ धोना आदि।

इस स्तर पर रोचक अभ्यास–प्रश्नों के माध्यम से ही बच्चों को व्याकरण सिखाया जाएगा।